

Segenswünsche aussprechen) 90. राज्ञः शिवं सावर्जस्य भूपदिप्याशंसते
करपौरवाक्ष्यैः RAGH. 14, 50. act.: रिपून् KATHA. 27, 141. mit infin. MBH.
3, 15643. आशंसतो बन्दिनं जेतुकामः (so v. a. जेतुम्) 10642. — 4) *bitton*
um (acc.), act.: सौवीरराज्ञस्य पुनःप्रसादम् MBH. 3, 15650. शम् Bha. P.
4, 10, 29. — 5) *loben, preisen*; act. mit acc. der Sache Bha. P. 4, 10,
9. — 6) *hersagen, recitiren*; med.: नान्दीम् ÇAK. Ch. 1, 5. *aussagen*, med.
DAÇAK. 59, 11. चित्तं पुष्करपद्मतेजसत्वं विद्वद्विराशंसितम् Spr. (II) 75.
ankündigen, vorhersagen; act. KUMĀRAS. 3, 14. Bha. P. 5, 22, 13. — Vgl.
घनाशस्त, आशंसन fgg., आशस, 2. आशा. — caus. *Hoffnung*, — *Anrecht*
geben auf (loc.): यदनाशस्ता इव स्मसि। आ तू न इन्द्र शंसय गोषु RV. 1,
29, 1; vgl. die v. l. TBa. 2, 4, 4, 5.

— उदा med. *sich getrauen*, mit acc.: पत्सवासा शरणं नोदाशंसते
ÇAT. Ba. 5, 2, 5, 5. व्रतचर्याम् 11, 1, 4, 2.

— उपा s. उपाशंसनीय.

— प्रत्या med. *erwarten, voraussetzen*: सर्वमेवात्र कत्याणी प्रत्याशंसे
मकृत्मानि R. Gora. 2, 121, 19.

— समा 1) act. *zusprechen, zuweisen*: समस्यै चर्षणिभ्य आ शंसत RV.
4, 37, 8. — 2) med. *hoffen* —, *rechnen* —, *vertrauen auf* (acc.): धृतरा-
ष्ट्रस्य बहुपुत्रस्य वृद्धिम् MBH. 5, 809. ते समाशंसिरे (ohne redupl.) लब्धो
भियं राज्यं च 1, 6920.

— उद् aufrufen: शर्धो मारुतम् RV. 5, 52, 8.

— निस् s. निःशस् und अनिःशस्त.

— परा s. पराशस.

— प्र 1) *laut verkünden; preisen, loben, rühmen* RV. 1, 21, 2. 138, 1.
2, 8, 3. ज्ञातवेदं प्र शंसति नमेसा 3, 3, 8. अग्निर्वितुं प्र शंसते 5, 17, 4. 6,
48, 1. 7, 100, 5. 8, 27, 15. ये मित्रं न प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः 63, 2. 10, 146, 6.
आन्यः क्रोशति प्रान्यः शंसति während der Eins schilt, lobt der Andere
TS. 7, 8, 8. 3. KATH. 34, 5. KATH. ÇA. 13, 3, 5. पोषाम् ÇAT. Ba. 3, 5, 2, 11.
विद्याम् 14, 4, 2, 24. 8, 9, 9. प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियः RV. 8, 19, 8.
बमङ्ग प्र शंसिषो देवो मर्त्यम् aufmuntern 1, 84, 19. ÅCV. GĀH. 2, 9, 4. —
त्रीणि चात्र प्रशंसति शौचमक्रोधमवराम् M. 3, 235. 7, 109. 10, 70. MBH.
1, 7433. R. 1, 13, 20. Spr. (II) 2024. (I) 2937. KATHA. 22, 132. नृप्रशंस-
त्यज्ञं यः M. 10, 88. प्र पूर्वगी (so ed. Bomb.) पूर्वज्ञो चित्रभानू गिरा वा
(wohl so zu lesen st. वा) शंसामि MBH. 1, 722. 2, 1536: 3, 2220. 15228
(Gegens. निन्द). 5, 5424. R. 2, 52, 81. Spr. 4594. RĪĀ-TAR. 4, 320. Bha.
P. 4, 12, 33. 15, 7. प्रशंसीयात् Spr. (II) 2424. प्रशंसीत् BHATT. 15, 65. प्र-
शशंस R. 3, 28, 8. 52, 22. 4, 2, 3. 8, 1. KATHA. 24, 168. 45, 129. समाग्यो
ऽस्मीत्यथात्मानं प्रशशंस पुनः पुनः MĀR. P. 129, 6. LA. (III) 90, 12. Bha.
P. 3, 5, 13. प्रशशंसुः MBH. 3, 2087. 2150. R. 1, 4, 15. 11, 10. 32, 3. Bha.
P. 3, 20, 50. प्रशशंसिरे R. 2, 112, 2 (122, 2 Gora.). प्रशस्य absol. MBH. 3,
16901. 14, 119. R. 1, 34, 53. 65, 36. R. Gora. 2, 4, 8. 5, 69, 15. Bha. P. 1,
19, 18. fgg. 4, 17, 8. 22, 41. 7, 5, 8. PAÑĀT. 98, 4. प्रशंस्य (I) R. 5, 59, 18. यच्च
वाचा प्रशस्यते M. 5, 127. वाग्मी हतो प्रशस्यते 7, 64. 204. 209. 9, 34. 10,
72. 142. भक्तानां हि परित्यागो न धर्मेषु प्रशस्यते MBH. 5, 5987. Spr. (II)
1262. 1836. (I) 1996. 5004. VARĪH. Bha. S. 48, 85. 53, 96. 56, 10. 14. 79,
19. KATHA. 18, 60. PAÑĀT. 34, 4. प्रशस्यमान R. 1, 4, 17. R. Gora. 1, 3,
61. DAÇAK. 66, 5. PAÑĀT. 57, 18. कुरिषा युवतिः प्रशशंसे Gtr. 1, 43.
प्रशस्त gepriesen, gelobt, gerühmt, empfohlen, für geeignet —, gut —,

vorzüglich gehalten, faustus (von Gestirnen, Tagen u. s. w.) AK. 1, 1,
4, 5. 3, 4, 24, 86. 34, 162. TRIK. 3, 3, 389. H. 86. Schol. HALĀ. 4, 96. कृपो-
षि तं मर्त्येषु प्रशस्तम् RV. 7, 90, 2. 2, 27, 12. देवा देवेषु प्रशस्ता 5, 68, 2. 1,
180, 8. धी 7, 1, 10. कृतं ब्रह्माणि सृष्टिषु प्रशस्ता 84, 3. 10, 160, 3. ÅCV. GĀH.
2, 8, 3. 10, 8. दिप् RV. PAṬ. 15, 1. प्रवचन 16. स्वकर्मसु M. 2, 183. 3, 5.
12. 24. 47. 123. 276. मृगपत्तिः 5, 22. धन R. 2, 3, 14. नत्तत्र, मुहूर्त 80,
17. राष्ट्र R. Gora. 1, 7, 16. देश Suça. 1, 123, 21. 136, 20. धर्मशाला MBH.
3, 15610. आरम्भ KUMĀRAS. 7, 71. शीतक्रियास्य MĀLAV. 48, 17. Spr. (II)
1654. 3779. (I) 3019. 4649. 5398. RAGH. 5, 25. 17, 36. VARĪH. Bha. S. 4,
6. 6, 12. 35, 3. 37, 1. 43, 15. 48, 42. 50, 2. AK. 2, 1, 4. HALĀ. 2, 4. PAÑĀT.
203, 2. स्थातुं हि क्षणमपि न प्रशस्तमस्मिन् MĀRĪH. 110, 23. SARVADAR-
NA. 115, 16. 19. सु° PAÑĀT. 1, 2, 2. अ° nicht für gut u. s. w. geltend,
verrufen: विभीतकशाप्रशस्तः संवतः कलिसंभयात् MBH. 3, 3849. मृगदि-
ज्ञाः Unglück verheissend R. 6, 16, 7. fgg. अप्रशस्ता वीषेयम् mangelhaft,
schlecht KATHA. 49, 19. अप्रशस्तं तु क्वाप्सु so v. a. unreines M. 11,
255. प्रशंसित = प्रशस्त PAÑĀT. 2, 1, 6. सु° 1, 4, 8. 6, 26. — 2) *vorher-
sagen* Spr. (II) 2898 (Conj.). — Vgl. प्रशंसक fgg., प्रशस्तव्य fgg., प्रशस्त,
अप्रशस्त, पुरुप्रशस्त, प्रशस्तव्य, प्रशस्ति, प्रशस्य, कविप्रशस्त, बङ्क°. —
caus. *rühmen, preisen*: उदतिष्ठन्महानादस्तदा कृञ् प्रशंसयन् HARIV.
10346. प्र सु शंसयिष्ये (प्रशशंसयिष्ये [I] die neuere Ausg., welches NILAK.
durch अतिशयेन कथयिष्ये erklärt; also hat er die andere Lesart vor
Augen gehabt) 8809.

— अतिप्र hoch preisen Bha. P. 3, 18, 10.

— समतिप्र dass.: तं (संप्रकारं) समतिप्रशंसन्। योधास्त्वदीयाः MBH.
7, 4690.

— अभिप्र rühmen, preisen: राजानमभिप्रशंसन् MBH. 3, 11908. 12571.
6, 2592. ये च त्वाभिप्रशंसयन्निन्देयुरथ वा पुनः 12, 3352.

— प्रति entgegenrufen u. s. w.: अप्रतिशंसत् ÇAT. Ba. 11, 5, 8, 9. °श-
स्त 10.

— वि 1) *aufsagen, recitiren*: मा चिदन्यदि शंसत RV. 8, 1, 1. 3, 39, 2.
अथा हि वा दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशते etwa ist nicht auszusagen
d. h. durch Worte zu erschöpfen 10, 143, 8. — 2) *recitierend theilen*: त्रि-
निविदा मूक्तं विशंसेत् AIR. Ba. 3, 19.

— अभिवि = वि 2): पत्कनीयसा इन्द्रसा व्यापृक्न्द्रो ऽभिविशंसति
TS. 6, 6, 24, 5.

— सम् zusammen —, *nebeneinander recitiren* AIR. Ba. 6, 26. 36. ÇAT.
Ba. 13, 5, 1, 8. ÇĀNKH. ÇA. 10, 13, 9. 11, 2, 18. 17, 9, 6.

— उपसम् hinzufügend aufsagen, anhängen ÇAT. Ba. 13, 5, 1, 8. ÅCV.
ÇA. 8, 8, 1. तार्क्ष्यैकपदा उपसंशस्य 12, 20. 10, 10, 4. ÇĀNKH. ÇA. 17, 8, 2.

शंस (von शंस) 1) m. parox. a) *Spruch, Zuruf; Anruf, Aufforderung, Ge-
bot; Lob* RV. 1, 27, 13. प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः 33, 7. 141, 6. 11. 182, 4.
यज्ञमानस्य 178, 4. 2, 20, 7. 31, 6. 10, 42, 6. नराम् 1, 173, 9. 3, 16, 4. 10. 6,
24, 2. शंसमाविदे 10, 113, 3. उरुष्या ण उरुभिर्देव शंसैः 7, 1. 4, 6, 11. 5, 3,
4. 41, 9. उभा शंसा सूर्य 4, 4, 14. उभा शंसा नरा मामविष्टाम् 1, 185, 9. स-
क्लं शंसा उत ये गविष्ठे VĀLAH. 9, 3. प्रज्ञा वै नरो वाक्शंसः AIR. Ba. 2,
2, 4. Ueber RV. 2, 26, 1 s. शंसशंस. — b) *Anwünschung; a) Verwünschung,
Fluch*: आरे तं शंसं कृणुहि निमित्तोः RV. 7, 25, 2. 34, 12. वनुष्यतः 56,
19. आरुषः 1, 18, 3. 3, 18, 2. अस्माकं शंसो अयंस्तु हृद्वाः 1, 94, 8. 166, 8.